त्रिपुरारी ऋतुल

सहरसा, बिहार

बैजा

जून-जुलाई की दोपहरी थी। कहीं से गर्म तप्त हवा आकर बदन को झुलसा जाती थी। सड़क की ओर ऐसा प्रतीत होता जैसे ऊष्ण दोपहरी,सन्नाटे की पतली चादर ओढ़ मुँह ढाँपे मंद-मंद सिसक रही है। यही अकथ्य-अजीब मायूसी पिछले दो-तीन घंटे से लगातार वातावरण पर छाई हुई थी। सड़क किनारे खूँटे से बँधे दोनों बैल प्यास के मारे फकफका रहे थे। बॉअ.. बॉअ...की आवाज़ से मालकिन को पुकार रहे थे। बॉअ बॉअ.. मतलब पानी दो,पानी दो! मैं द्वार की चौकी पर लेटकर बहुत देर से इन सभी दृश्यों को निहार रहा था। थोड़ी देर बाद रूना आई और बैलों को ठंडा-ठंडा चापाकल का पानी और रूखी-सूखी घास डालकर चली गई। दोनों बैल ठंडे पानी से तृप्त होकर सूखी घास पर टूट चुके थे। मैं चौकी से उठकर आसमान देखने थोड़ा बाहर आया। ऊमस चीख रही थी। आकाश बादलहीन थे। बैलों को ठंडा पानी पीते देख मुझे भी पानी पीने की प्रबल इच्छा हुई। मैं घर के भीतर चला गया। मेरी छुटकी बहिन किरणी अकेले लूडो खेल रही थी। माँ रसोई में थी। मैंने पानी पिया और किरो के साथ खेलने लगा। थोड़ी देर बाद एक फटी-मोटी-कर्कश आवाज़ आई— "मलकैन"...मैं बाहर आया। दोनों हाथों से बड़ी-सी कटोरी पकड़े,तवे-सी गर्म धरती पर नंग-धड़ंग खड़ा वह चिचिया रहा था—"मलकैन खाना खैबै"।

बैजा! मुहल्ले में सब उसे 'बैजा' कहकर ही पुकारते थे। उसका निहायत गंदा और वर्षों से नहीं नहाया हुआ स्थूल-दुर्गंधित शरीर,चिपचिपी धूल से भरे बड़े-बड़े बाल और लंबी दाढ़ी पर.भिन-भिन-भिन.भिन्नाती बालुई मक्खियां,निहायत गंदी! चेहरे पर लटकती मोटी थुलथुल झुर्रियाँ,कमर को अर्द्ध लपेटे मटमैले-गंदले-दुर्गंधयुक्त फटी धोती का एक टुकड़ा व उसके भारी-चौड़े पैरों से घिसियाता दुरंगा,फीता टूटा चप्पल—उसे बहुत ही वीभत्स,भद्दा,कुरूप व बेढंगा स्वरूप प्रदान करता था। पंद्रह-बीस जगह से फटी धोती का वह टुकड़ा,उसके अंगों को ढँक पाने में समर्थ नहीं था और इसी नंग अवस्था में वह एक बड़ी-सी-कटोरी हाथ लिए मुहल्ले-भर विचरण करता और अपना पेट भरता था।

मैंने अंदर आकर माँ को सूचित किया और अपना एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक ढूँढ़ने लगा।
"मलकैन!..बैजा..!..खैबै..!..मालिक!.." मोटी-कर्कश आवाज़ अंदर तक गूँजी।
फिर से आवाज़ आई तो किरणी को मैंने पुकारा—
"किरो—माँ को बोलो—जल्दी!"
"मम्मी—जल्दी दे दो!"
"थोड़ी देर रूको—दे रही हूँ " रसोई से आवाज़ आई।

अभी-अभी दाल बनी ही थी। शायद माताजी उसे छौंक रही थी,इसलिए थोड़ी देर थी,लेकिन बैजा के हृदय में इतना धैर्य न था। वह निराश होकर द्वार से बड़बड़ाता हुआ लौटने लगा। दस कदम सड़क की ओर गया होगा कि माँ ने पीछे रसोई से ही आवाज़ दी— "किरणी रोक उसे!" किरो और मैं द्वार की और दौड़ें और जोर-जोर से नाम चिल्लाकर उसे रोकने लगे। तीन-चार बार पुकारने के बाद अचकचाकर वह अपना नाम सुन वहीं रूक गया और इधर-उधर ताकने लगा। मैं जब तक माँ से बर्तन लेने की कोशिश करता,उसके एक क्षणांश में ही माँ,बिना चप्पल पहने नंगे-पैर,द्वार से सड़क तक चली गई और बैजा की कटोरी में चावल-दाल और करेला की भुजिया डालकर विद्युत-गति से लौट आई। सड़क की तप्त गिट्टी पैरों में छेद कर रही थी। माँ के पैरों में छाले उभर आए,लेकिन बैजा उसी तप्त पट्टी पर चलकर आया था और अब वापस चले जा रहा था। हालाँकि दुरंगा फीता टूटा चप्पल उसे कुछ राहत अवश्य देता था,लेकिन बार-बार पैर फिसल जाने से उसके तलवे जल जाते थे। बैजा की दृष्टि कमजोर हो चली थी,अब उसे दुनिया धुँधली दिखने लगी थी ,इसलिए वह कटोरी में हाथ डालकर टटोल रहा था,अनुमान कर रहा था — तीमन! तरकारी! लेकिन उसके अभ्यस्त हाथों ने उसे आज भी निराश किया। आज भी तरकारी नहीं। तीमन नहीं। ...."मलकैन! तीमन? तरकारी? मालिक! तीमन?".... शिकायत के लहजे में बड़बड़ाता हुआ,असंतुष्ट मन से,वह,कटोरी हाथ में लिए सड़क पर जाता रहा। मुझे याद आया सुबह में मछली बिकने आई थी— थथीवाली ने लिया था। मैंने कहना चाहा कि धीमन के यहाँ आज तीमन बना है,ले लीजिए,लेकिन मैं अचानक ही रूक गया। धीमन? बैजा,धीमन के द्वार पर सपने में भी नहीं जा सकता। धीमन ने ही तो...? मेरी दोनों आँखें उसे बहुत देर तक निष्पलक देखती रहीं। पलकें जब गिरकर पुनः उठीं तो बैजा मेरी नज़रों से ओझल हो गया था और मैंने देखा सामने रूना के दोनों बैल उसी घास पर टूटे जा रहे थे,अनिच्छा से चबाए जा रहे थे। मैं चौकी पर आकर लेट गया।

बैजा की पूरी कहानी मुझे तब मालूम हुई—जब पिछली बार लच्छो,दादी से मिलने आया था। वह जब-जब बैजा से मिलने आता तो मेरी दादी से जरूर मिलता था। बैजा रिश्ते में उसका कोई था। जब पिछली बार आया था,तो देर रात तक बैठकर दादी से बातें करता रहा। उस रात भयानक बारिश हो रही थी और मैं भी दादी के पास बैठकर सबकुछ सुन रहा था। दादी एक-एक घटना की प्रत्यक्षदर्शिका रही है—अपनी आँखों तले बैजा के जीवन के एक-एक क्षण को घटते हुए देखा है।

आज से 40 बरस पहले की बात है। कोसी की भीषण बाढ़ प्रलय ला चुकी थी। चारों ओर हाहाकार मचा था। लोग से लेकर जीव-जंतु-जानवर सभी इस मार से त्रस्त थे। सबका जीवन अस्त-व्यस्त था। पूरबी बाँध पर शरणार्थी ठहराव केंद्र और राहत शिविर बनाया गया था,जहाँ भोजन,कपड़े और अन्य जरूरत की चीजें उपलब्ध कराई जा रही थीं।

दादी कहती है—जब वे वहाँ पहुँचीं तो बड़ा अफरा -तफरी का माहौल था—चारों ओर बस हो-हो करते लोग! भोजन,वस्त्र के लिए लोग खद-खद कर रहे थे! बाप रे बाप किसी को रत्ती भर भी धीरज नहीं! वहाँ पहुँचकर जब दादाजी तंबू बाँधने लगे तो दादी कुछ देर तक बाहर खड़ी होकर सारा तमाशा देखती रही। तंबू से सटे पीपल वृक्ष के पास बैठकर बैजा बहुत जोर-जोर से रो रहा था। उस समय वह हट्टा-कट्टा जवान था। थोड़ी देर बाद तंबू तैयार हो गया। दादी ने भीतर जाकर सामान रखा और कपड़े सहेजकर,बिछावन बिछाने लगी और जब चटाई लाने बाहर आई,तो बैजा अभी भी लगातार रोए जा रहा था। दादी से रहा नहीं गया। उसके पास आकर बोली—'कि भेल? कियए काने छी?' उसने सिर ऊँचा कर सामने देखा। उसके शब्द लयबद्ध हो गए। दुखड़ा सुन दादा-दादी बड़े दुखी हुए। दादाजी ने ढाढ़स देते हुए उसे तंबू में लाकर बैठाया। दादी चूड़ा-नून-तेल का नाश्ता तैयार करने लगी। इस प्रकार दादा-दादी से बैजा का परिचय हुआ। वह कोसी के पश्चिमी किनारे बसा गाँव—'मीनपुर' से आया था। मेरा गाँव—'धर्मूला' कोसी के पूरब में है। हुआ यह कि पश्चिमी बाँध के टूटने से अचानक सामने के गाँव डूबने लगे,उन्हें सँभलने का,जानने-बूझने का क्षणिक-अवसर तक नहीं मिला। बैजा का गाँव पश्चिमी बाँध के ठीक सामने बिल्कुल सीध में था,इसलिए सबसे पहले और भयंकर तरीके से मीनपुर डूबा और फिर एक-एक कर पश्चिमी गाँव डूबने लगे। एकाएक रात में चीख-शोर की आवाज़ सुनाई देने लगी—बैजा ने सुना था! ठंडे पानी का अचानक स्पर्श पाकर लोग अचंभित होकर नींद से जागे—ये क्या? कहाँ से...?..? लेकिन जितनी देर में लोग कुछ समझ पाते,कुछ कर पाते, तब तक बच्चे-बूढ़े,माल-मवेशी सहित पूरा गाँव सन्नाटे में डूब चुका था। बाढ़ के पूरब तक आते-आते भोर हो चुकी थी और पानी का स्तर भी कम हो गया था। सुबह होते ही प्रशासन की भी नींद खुली—लोगों सहित माल-मवेशियों को ऊँचे स्थान पर पहुँचाकर राहत सामग्री प्रदान किए जा रहे थे। पूरब में कमर तक ही पानी आया,जबकि पश्चिम में आधा छत तक,पानी में डूब गया। बैजा बहुत दिनों तक रोता रहा,अफसोस करता रहा—'वह ख़ुद तो किसी तरह रात-भर हेलकर-तैरकर सुबह तक पूरबी बाँध तक आ गया,लेकिन किसी को नहीं बचा पाया'..अपने माँ-बाप को भी नहीं! साथ ही उसकी चार गाय और दो भैंस भी डूबकर मर गईं।

दिन के एक बज रहे थे। मैं नहा-धो चुका था। माँ ने खाना परोसकर आवाज़ दी—"त्रिपुरारी"
"आ गया माँ,बस एक सेकंड!" धूप में कपड़े फैलाते हुए मैंने कहा
"जल्दी करो,थोड़ा दुकान भी जाना पड़ेगा।"
"किसलिए"
"चीनी ख़त्म हो गई है"
"हाँ तो,किरणी को भेजो? "
"किरो तो सो गई है!"
मैं खाना-खाकर दुकान की ओर निकल गया था। बाहर निकलते ही देह जलने लगी। घर से दुकान जाने के क्रम में ही बैजा का टूटा-फूटा छप्पर पड़ता है। जिसमें अब सिर्फ नाममात्र का ही घर शेष है। धूप-पानी,आँधी-तूफान सब इस पर बड़े शान से राज करते हैं।

दुकान जाते और फिर लौटते वक्त मैंने बैजा के घर की ओर देखा। घर नहीं मरघट! सारा छप्पर हवा उड़ाकर ले गई थी,बारिश के पानी से बाँस सड़कर कमजोर हो चुके थे,टाट की डोरी ढीली होकर लुढ़क गई थी,कहीं-कहीं से जंग लगी नुकीली काँटी निकली दिख रही थी। वह पशु-घर प्रतीत होता था। दिखने में वैसा ही लगता,जैसे—मांसहीन कंकाल! घर के नाम पर सिर्फ बत्ती-बाँस ही शेष है। घर लौटा तो देखा— माँ शरबत बना रही थी। मैं चीनी देकर द्वार पर आ गया। अचानक मुझे कलरी का स्मरण हो आया। कलरी...?

बाढ़ आने के लगभग दो महीने बाद की बात है। जलस्तर अभी थोड़ा-सा ही टसका था। पूरबी बाँध पर अक्सर बैजा नदी से मछली पकड़कर लाया करता था—एकदम ताजी-ताजी मछली! दादाजी भी बड़े खुश—वाह रे बैजू! कोसी का रोह माँछ! आह स्वादिष्ट! बेजोड़ ! बैजा की ही तरह दादाजी भी तीमन-तरकारी के बड़े शौकीन थे। एक दिन जब बैजा मछली लेकर पहुँचा तो संग पीछे से एक युवती भी आई। यह देख दादा-दादी को आश्चर्य हुआ! बैजा तंबू में आया और दादी को मछली की थैली देते हुए बोला—"लो भौजी तीमन के लिए" और फिर उसी के आँखों के इशारे पर युवती ने आगे बढ़कर दादा-दादी के पैर छूए! दादी ने बैजा की ओर आश्चर्य से ऑख घुमाया—यह कौन..? "भौजी! ई कलरी है.." मनोभाव देखकर दादी ताड़ गई—बैजा ने ब्याह कर लिया है! कैसे..? ई कलरी इसे कहाँ..? लेकिन दादाजी ने माहौल के भारीपन को दादी से यह कहकर हल्का कर दिया कि—"ऐ नरैन की माई! तीमन-चावल के लिए इससे बढ़िया अवसर कब और कहाँ मिलेगा? जाओ स्वागत करो बहू का!" सभी के चेहरे पर मुस्कान तैर गई थी! सतरगढ़ा कोसी के पूरब में बसा एक गाँव है। यहीं की रहने वाली थी—कलरी! माँ-बाप की इकलौती संतान! पिछले ही साल अनाथ हो गई थी बेचारी! माँ-बाप पर रोपनी करते ही धड़ाम से बिजली गिर पड़ी और दोनों बस वहीं ढेर हो गए! अकेले घर में बिना माँ-बाप के रहना उसे बड़ा अजीब लगता और रात को भयभीत करता। जिस दिन बाढ़ आया था,उस दिन तो वह छटपटा पड़ी थी किसी अनहोनी की आशंका से,लेकिन शुक्र है कमर तक ही पानी आया। सुबह होते-होते बाँध पर आ गई थी कलरी। और नदी में उस दिन जब मछली पकड़ने उतरी तो अचानक पैर धँसने के कारण वह डूब ही गई थी,अगर बैजा अपनी जान पर खेलकर कूद न गया होता! वह भी वहाँ ठीक अभी-अभी मछली पकड़ने ही पहुँचा था। बस नदी में उतरने ही वाला था कि शोर हुआ "डूबी-डूबी कोई बचाओ रे" और वह छलाँग लगाकर कूद पड़ा। कोसी की तेज धारा से लड़ते-जूझते जब बहुत देर बाद बैजा पानी से बाहर आया तो कलरी भींगी साड़ी में बेहोश-बेसुध उसकी छाती से लिपटी हुई थी। लोगों ने कहा चित्त हो गई लेकिन कुछ ने कहा नहीं-नहीं अभी फफक बची है,छाती पर चढ़कर दबाओ पानी निकलेगा। कलरी के लंग्स में पानी भर चुका था। दो-तीन घंटे बाद जब पूरा पानी निकला तो उसे होश आया। उस समय वह बैजा की गोद में थी और फिर गले से लिपटकर रो पड़ी थी कलरी! लोग चारों ओर घेरकर खड़े थे। कलरी रोई जा रही थी। बैजा दौड़कर राहत शिविर से कलरी के लिए साड़ी ले आया और खाने के लिए मूढ़ी-

शक्कर! पूरी कहानी जानकर,बैजा ने पीपल गाछ को साक्षी मानकर कलरी से संबंध जोड़ लिया— "टहनी से टूटे पत्ते का दर्द,टहनी से टूटा पत्ता ही महसूस कर सकता है।" कलरी फफक पड़ी थी। लोगों ने ताली बजाकर बैजा के कथन को स्वीकृति दी थी। बैजा को कलरी के हाथ का शरबत बड़ा पसंद था।मैं पुस्तक लेकर द्वार पर बैठ गया। धीरे-धीरे सूरज ढ़लने लगा था। बच्चे विद्यालय से लौटकर शोरगुल करने लगे थे,जिससे मायूसी छँटने लगी थी और ठंडी बयार मंद-मंद रस घोलने लगी थी। अभी शाम होने में देर थी,इसलिए किरणी अभी तक मीठी नींद ले रही थी। मैं पुस्तक खोलकर पढ़ने लगा। धीरे-धीरे शाम हो गई। शाम होते ही मैं सड़क की ओर घूमने निकल गया। जब लौटा तो देखा नानाजी आए हैं। मैंने प्रणाम किया। माँ मसाला पीस रही थी। नानाजी जरूर मछली लेकर आए होंगे। किरणी चाय बना रही थी। उसने कहा "भाईजी दादी को बुला लाइए,चाय बन गई है।" मुहल्ले भर की दादियों की मंडली सब दिन बड़ीबोन के यहाँ जमती है। शाम तक जब कोई बुलाने न जाए तब तक नहीं आएंगी। मैं दादी को बुलाने चला गया। बड़ीबोन के घर के पास मंदिर पर शाम होते ही बाजा बजना शुरू हो चुका था। कबीर वाणी की सुगंधि चारों और फैल रही थी—

...उमर सब धोखे में खोये दियो रे।
पांच बरस का भोला-भाला
बीस में जवान भयो।
तीस बरस में माया के कारण,
देश विदेश गयो।
बरस पचास कमर भई टेढ़ी,
सोचत खाट परयो।
वात पित कफ घेर लियो है,
नैनन निर बहो।
कहै कबीर सुनो भाई साधो,
चोला छूट गयो।
...उमर सब धोखे में खोय दियो रे।

किरणी साँझ-बाती देकर पढ़ने बैठ गई। शाम प्रगाढ़ हो चली थी। पिताजी अभी तक घर नहीं लौटे थे। दादी द्वार पर बैठकर चाय पी रही थी। गर्मी के कारण मैंने शाम को फिर नहाया और छत पर कपड़ा लेने गया तो देखा माँ मछली बना रही थी और नानाजी कुर्सी लगाकर वहीं बैठे हुए बात कर रहे थे। नानाजी चाय पी चुके थे। घर में माँस-मछली रसोई में नहीं बनती थी,उसके लिए माँ ने छत पर एक अलग चूल्हा बना रखा था। कपड़ा पहनकर मैं नीचे आ गया। किरणी कमरे में पढ़ रही थी। मैं भी कॉपी-किताब लेकर पढ़ने के लिए बैठ गया। वह अभी गणित बना रही थी। मैं पुस्तक से कुछ नोट करने लगा। कुछ देर बाद किरणी ने कहा—"भाईजी आज भूगोल पढ़ा दीजिएगा।" मैं कुछ महत्त्वपूर्ण चीज़ नोट कर रहा था। अभी थोड़ी देर थी। मैंने लिखते-लिखते ही कहा "अच्छा! तो बताओ तारे क्यों टिमटिमाते हैं?" चेहरा देखकर लगा,नहीं बता पाएगी,लेकिन उसे याद था। तारे बहुत दूर हैं,दूरी के कारण उससे आने वाली रौशनी विचलित हो जाती है,इसलिए तारे हमें टिमटिमाते प्रतीत होते हैं। छत से आवाज़ आई—'त्रिपुरारी दादी को खाना दे दो'। जब-जब घर में माँस-मछली आता है,दादी के लिए ऊष्णा मूंग की दाल और रोटी पहले से ही

माँ तैयार करके रख देती है और ऊपर से एक कटोरी दूध। दादी को खाना दे आने के बाद मैं किरणी को पढ़ाने लगा। लगभग आधे घंटे बाद किसी ने चुपके से दरवाजा खोला—"कौन? पापा आ गए"। दादी खाना खाकर सो चुकी थी। पापा को देखकर हम दोनों के चेहरे पर मुस्कान खिल आई।"मम्मी?" पापा का पहला सवाल था।"माँ छत पर मछली बना रही है। नानाजी आए हैं। आपका फोन क्यों ऑफ आ रहा था?" मैंने पापा का मोबाईल लेते हुए पूछा। "बैट्री ख़त्म हो गया होगा।" कहकर पापा छत पर चले गए। पिताजी शहर में एक लघु कपड़ा व्यवसायी के दुकान पर काम करते थे।

पिताजी ने ऊपर से हमें आवाज़ दी और एक कमंडल पानी लेते आने को कहा। भोजन तैयार हो चुका था। किरणी पहले ही चली गई। जब मैं छत पर पानी लेकर पहुँचा तो अचानक बिजली चली गई। चारों ओर घुप्प अँधेरा हो गया! थाली में गरमागरम चावल और कटोरा भर तीमन निकालकर माताजी ने मुझे बैजा को दे आने के लिए कहा। बिजली कट गई थी,इसलिए अकेला जाना संभव नहीं था। किरणी को मैंने साथ लिया। वह मुझे टॉर्च दिखाकर आगे-आगे चलने लगी। अँधेरे में निकलने से वहाँ पहुँचने तक बैजा की कहानी मेरे हृदयसागर पर हिलोरें मारने लगी।

बाढ़ आने के लगभग छह महीना बाद पानी उतरा। सब अपने-अपने घर की ओर लौटने लगे। बैजा और कलरी मेरे ही गाँव में सरकारी ज़मीन पर पुनर्वासी होकर बस गए। दादाजी की सहायता से बैजा ने वहाँ एक छप्पर का घर भी बनवा लिया। और जब दादाजी पंजाब जाने लगे तो बैजा भी साथ चला गया। वहीं से कमाकर यहाँ पैसे भेज दिया करेगा। कलरी यहीं रहने लगी। दादी के साथ उठने-बैठने लगी। महीना-दो महीना पर जब कोई पंजाब से गाँव आने लगता तो उसी के माध्यम से लोग पैसा व अन्य चीजें अपने घर भिजवा देतें। लोग ज़्यादातर धीमन लीडर से संपर्क रखा करते थे क्योंकि उसका गाँव से आना-जाना लगा रहता था। धीमन को सब लीडर जी कहते थे। दादाजी और बैजा भी उसी के द्वारा पैसा भिजवाते। लेकिन एक बार पंजाब में ही काम को लेकर धीमन और बैजा में कहासुनी हो गई। मालिक ने धीमन को इसके लिए कसकर फँटकारा—"रे धीमना सही बात लगता है रे,काम से चोरी ऊपर से सीनाजोरी" इस प्रकार धीरे-धीरे बैजा का महत्त्व सबकी नज़र में बढ़ने लगा। कहते हैं इससे धीमन को डाह हो गया "कल का छौड़ा हमको लीडरी सिखाबेगा?"और इस तरह बैजा से उसका टोकना-चालना भी बंद हो गया। इसलिए जब धीमन इस बार घर लौटने लगा तो बैजा ने उसके माध्यम से पैसा नहीं भिजवाया। उसने सोचा थोड़े दिन बाद वह ख़ुद ही कलरी को देखने -पूछने गाँव जाएगा। लेकिन,धीमन जब गाँव आया तो मन का डाह भी साथ लेते आया था। शाम तक ही हल्ला हो गया कि बैजा ने वहाँ दूसरी शादी कर ली है। अब वह इस गाँव को पहचानता

भी नहीं! कलरी..? कौन कलरी? वह किसी कलरी-खलरी को नहीं जानता। अब वह पंजाब में गृहस्थी बसावेगा! गाँव में हो-हल्ला के बाद जब धीमन दादी को पैसा देने आया तब दादी नैहर जा रही थी। उस दिन कलरी भी वहीं थी। उसे रत्ती भर विश्वास नहीं धीमन की बातों पर! तब धीमन दादी की ओर देखकर बोला था—"मत कीजिए विश्वास! सच कहता हूँ तो ख़राब लगता है! अब आपकी बात करने से भी वह घिनाता है! फिर मैं पूछता हूँ— सब बार पैसा भेजता था न! इस बार आख़िर कौन साँप सूंघ गया भाई.? बोलिए..? चुप क्यों हैं?.मेरा तो फर्ज़ है संदेश पहुँचाना,सो कह दिया!" कलरी को इस 'आख़िर' ने धक्क से चोट किया।.. कहीं सच में ही तो नहीं..?

गाँव में धीमन की बात इस कदर फैल चुकी थी कि इसे झुठलाना मुश्किल हो गया था। कलरी भी इस अप्रत्याशित असत्य को सत्य मानने के लिए बाध्य हो गई थी। घर में बैठी रोती रहती। दादी रहती तो थोड़ा सहारा देती लेकिन इस अनजाने गाँव में कलरी के खाने-पीने को पूछने वाला और कौन था?. पीठ पीछे गाँव की स्त्रियाँ उसे भला-बुरा कहतीं। दुकान,उधार सामान लाने जाती तो दुकानदार का सामान ख़त्म हो जाता। धीमन की पत्नी थथीवाली भोर-साँझ उसे ताना देती—'टुअरी'। कलरी का कलेजा अब भारी-भारी रहने लगा था। अब उसे भी लगता कि बैजा को उसकी कोई फ़िक्र नहीं,वह लौटकर नहीं आएगा। इसी तरह एक दिन उसका बचा-खुचा धीरज का धुंधलका भी ख़ामोश हो गया। कुछ दिनों बाद जब बैजा लुधियाना की हरी-हरी चूड़ियाँ और रोह माँछ लेकर गाँव लौटा तो घर में कलरी नहीं थी। वह दादी के पास आया। उसे आश्चर्य हुआ भौजी भी नहीं..? दोनों कहाँ.? आस-पड़ोस के लोगों ने बताया—'कुछ दिनों से तो कलरी घर से निकली भी नहीं है भाई! बीमार होगी शायद ! बिमला काकी तो नैहर गई है।' तुरंत ही गाँव में हल्ला हो गया—'अरे! कलरी हरा गई रे!अरे! कलरी भाग गई रे! इसके ठीक दो दिन बाद की बात है जब खुदिया चरवाहा कोसी में भैंस को पानी पिला रहा था,तो अचानक कुछ देख वह अचंभित हुआ! साड़ी से लिपटी लोथ!..लाश?..पेट-फूली जनानी..? वह तुरत समझ गया। ई तो क...क..क.लरी! हाय रे राम! अनर्थ! वह चीखते हुए बैजा के घर की ओर सरपट दौड़ा। पूरे गाँव में हाय-तौबा मच गया। कलरी ने तंग आकर नदी में छलाँग लगा दी थी। चिथड़े में लिपटा उसका फूला हुआ शरीर बहते-बहते नदी तट पर आकर पड़ा हुआ था। आँखें पथरा गईं थीं। गर्भ में बच्चा भी मर गया था। जब दादी नैहर से लौटी तो बैजा सब कुछ जानकर हक्का-बक्का रह गया। उसके पैरों तले ज़मीन खिंच गई। वह माथा पीट-पीटकर रोने लगा,बेहोश होने लगा। उसी दिन से बैजा कमाना-खाना छोड़कर भीख माँगने लगा। क्या होगा कमाकर? जिसके लिए कमाने गया,कमाई ने उनसे वही छीन ली। वह क्या करेगा कमाकर?

'तीस बरस में माया के कारण,देश विदेश गयो। कहै कबीर सुनो भाई साधो,चोला छूट गयो। नैनन नीर बहो।' बैजा किसी दूसरे को नहीं ख़ुद को दोष देता है! रोकर कहता है वह क्यों गया था पंजाब..? क्यों नहीं उसने पैसा भेजा? पैसा भेज देता तो कलरी को विश्वास तो हो जाता। उसे ताने तो नहीं सुनने पड़ते! कोई उसे 'टुअरी' तो नहीं कहती! पैसा रहता तो खरीद -कीनकर खाती,कोई दुकान तो बंद नहीं करता देखकर! वह नाशक है! वह हत्यारा है! वह पापी है! अपनी कलरी का हत्यारा! इसी ग्लानि व्यथा से सालों से बैजा अपना जीवन काटता चला आ रहा है। साल-भर पहले ही नहाना-धोना बंद कर चुका है। लोग कहते हैं अब उसे मिर्गी भी आने लगी है!

मैं और किरणी जब बैजा के घर पहुँचे तो वह अपने टूटे-फूटे छप्पर से आसमान की ओर देख रहा था। मुझे लगा तारों में वह कलरी को पहचानने की कोशिश कर रहा है। उससे बात कर रहा है—'कलरी क्या तुम भी टिमटिमाती हो?..नहीं-नहीं टिमटिमाती प्रतीत होती हो! दूरी गलतफ़हमी का एक काल्पनिक लिबास बुनती है। मुझे भरोसा है तुम अब जानती हो आसमान से ज़मीं वैसा नहीं दिखता,जैसा कि वह है। इन्हें जोड़ने वाले प्रकाश बीच में प्रपंच रचते हैं। एक रंगीन प्रपंच,जिससे आसमान और धरती के परस्पर मायने बदल जाएँ। लेकिन वे बदलते नहीं क्योंकि जिस दिन ये दोनों अपने मायने बदल लेंगे,उस दिन ये आसमाँ,ज़मीं के लिए आसमाँ नहीं रह जाएगा और ज़मीं भी आसमाँ के लिए अपना अर्थ खो देगी। कलरी! मुझे क्षमा कर देना प्रिये! तुमने अपना मायने बदलकर मेरा अर्थ भी बदल दिया! इस बदले अर्थ से उत्पन्न ग्लानि व्यथा को पीना ही मेरा प्रायश्चित है। मेरे अंदर का बैजा तो उसी दिन निष्प्राण हो गया था,जब मैंने तुम्हें चीथड़े में लिपटा हुआ देखा था। बैजा के इस शरीर में तुम्हारी ही आत्मा शेष है और बैजा की आत्मा तो तुम्हारे शरीर के साथ ही नष्ट हो चुकी है।' मैं अंदर घुस गया। एक चमकीला तारा घर के ठीक ऊपर चमक रहा था। "लीजिए तीमन-चावल है। खा लीजिएगा।" बड़ी कटोरी में डालते हुए मैंने ऊँचे स्वर में कहा।
"तीमन?" अँधेरे में उसने इधर-उधर ताका।
कटोरी को मैंने उसके सामने रख दिया—"हाँ और चावल भी है।"
"मालिक! जय हो मालिक!" बैजा ने प्रसन्न होकर हाथ से कटोरी को टटोला।

किरणी सड़क पर टॉर्च लिए खड़ी थी। मैं बैजा के घर से बाहर आ गया। अँधेरा,प्रशांत महासागर-सा,प्रवाहित हो रहा था। आसमान में थोड़े बहुत बादल उमड़ रहे थे,सघन अँधियारे में तारे चमकते थे,लेकिन चाँद कटकर हँसुआ हो गया था। झाड़ियों से कीट-पतंग छिपकर अपना प्रिय तान सुनाते थे। धीमी-धीमी मीठी हवाएं चल रही थी। पेड़-पौधे मस्ती में झूल रहे थे। दूर किसी घर से रो-रोकर खिलखिलाने की आवाज़ आती थी। दादी मंडली से पता चला कि सुगिया पागल हो गई है। खसम आकर बाप के यहाँ छोड़ गया है और दूसरी कनिया ले आया है! मैंने अंदाज़ किया खिलखिलाने की आवाज़ धीमन के घर के पास से आ रही है। वह कई सालों से गाँव नहीं लौटा है। सुगिया धीमन की इकलौती बेटी है! हर समय खाने में माँछ माँगती रहती है। उसकी खिलखिलाहट रात को बड़ी डरावनी मालूम पड़ती है!!

किरणी टॉर्च लेकर तेजी से घर की ओर कदम बढ़ा देती है।